Volume 2, Issue 2, 2021 ISSN: 2322-0694

प्रत्नकीर्ति
(Pratnakīrti)

(An-online half yearly peer-reviewed journal)

"प्रत्नकीर्तिमपावृणु"

Editors

Lala Shankar Gayawal

Priyavrat Mishra

Pratnakīrti Oriental Research Institute
Vārāṇasī, U.P., India

(Estd. 2004)

विषय सूची

सम्पादकीय I

प्रकाशकीय i

शोधलेख 1

भरतमल्लिकः तत्कृतयश्च 1
राहुलमाइतिः

पण्डित प्रेमनारायण द्विवेदी की साहित्य-सम्पदा 15
नौनिहाल गौतम

A Biographical Study on the Forgotten Sanskrit Scholar: Baboo Krishnanandan Singh 28
Amit Kumar Chandrana

Characteristics of Hero or Heroine of Messenger Poem 33
Asim Halder

कलिकाले कलिविडम्बनकाव्यस्य उपादेयता 41
गणेशपण्डितः

संस्कृतवाङ्मये शब्दार्थहरणविषयिणी अवधारणा 46
भास्कर चटर्जी

सुखबोधिन्यनुसृत्य अहोरात्र इत्यत्र समासविमर्शः 52
अरुण भट्टः

लघुचन्द्रिकाप्रदर्शितदिशा बौद्धतार्किकमतदूषणे 55
पी॰ आर॰ वासुदेवन्

वर्तमान संस्कृत–साहित्य का विशिष्ट नाटक : 'प्रशान्तराघवम्' 58
तेज प्रकाश

व्यङ्ग्य–कवि प्रमोद कुमार नायक की संस्कृत–कृतियों में शिक्षा 67
शशी मथुरिया एवं पूर्णचन्द्र उपाध्याय

Pratnakīrti, Volume 2, Issue 2, 2021 ISSN: 2322-0694

पण्डित प्रेमनारायण द्विवेदी की साहित्य-सम्पदा

नौनिहाल गौतम*

सारांश

मध्यप्रदेश के सागर नगर में 05.06.1922 को जन्मे, अनुवाद विधा के पारंगत कवि पं० प्रेमनारायण द्विवेदी ने लगभग 21000 संस्कृत पद्यों की रचना की है। कवि की संस्कृत में कुछ मौलिक रचनाएँ, कुछ संस्कृत रूपान्तर हैं जबकि अधिकांश प्रसिद्ध कवियों की कृतियों के संस्कृत पद्यानुवाद हैं। उन्होंने हिन्दी में 'शनिचालीसा' और 'अपना सागर ताल बचाओ' कविताएँ भी लिखीं। उन्होंने हिन्दी के प्रायः सभी बड़े कवियों की रचनाओं को संस्कृत में अनूदित किया है। उन्होंने तुलसीदास आदि भारतीय कवियों के साथ ही कन्फ्यूशियस आदि विदेशियों की रचनाओं का भी सुललित संस्कृत भाषा में पद्यानुवाद किया। देवकाव्य कहे जाने वाले वैदिक सूक्तों को संस्कृत पद्यों में उतारा तो बुन्देली बोली के देशज रसिया गीतों को भी संस्कृत में सहेज दिया है। मीरा, सुन्दरदास, जगन्नाथ, कबीर, महादेवी वर्मा, नारायण स्वामी, रसखान, हठी, आनन्दघन, रविदास, बुद्ध, सुकरात, कन्फ्यूशियस, आगस्टाइन और एमरसन के काव्य और सद्वचनों के पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत संस्कृत पद्य अनुवाद प्रकाशित हैं। उन्हें 2005 ई० में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया और मृत्यूपरान्त 2009 ई० में श्रीमद्रामचरितमानसम् पर साहित्य अकादमी, दिल्ली का अनुवाद पुरस्कार प्रदान किया गया। उनकी रचनाएँ दूर्वा आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं। वे भक्ति साहित्य के मर्मज्ञ और अनुवाद विधा के पारंगत कवि थे। उन्होंने अपनी लेखनी से संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया है। उनके साहित्य से अनुवाद की विस्तृत भूमिका निर्मित हुई है। उनका शोधग्रन्थ आचार का शास्त्रीय मार्ग प्रशस्त करता है। राधावल्लभ त्रिपाठी ने कवि द्विवेदी जी की प्रशंसा की है।

भारतवर्ष के हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश में हिन्दी के प्रसिद्ध कवि पद्माकर की भूमि सागर नगर में 05.06.1922 को जन्मे, अनुवाद विधा के पारंगत कवि पं० प्रेमनारायण द्विवेदी ने लगभग 21000 संस्कृत पद्यों की रचना की है। उन्होंने परम्परागत पद्धति से शास्त्री, आचार्य तथा आधुनिक पद्धति से बी.ए., एम.ए. और पीएच्.-डी. उपाधियाँ प्राप्त कीं। काशी वास के समय उन्होंने स्वामी करपात्री जैसी विभूतियों को देखा-सुना था। विभिन्न शास्त्रों का उन्होंने जिन गुरुओं से ज्ञान प्राप्त किया उनके प्रति वे आजीवन कृतज्ञ बने रहे।

कुछ समय उन्होंने संसार से विरक्त होकर यायावर जीवन व्यतीत किया था। अध्यापन उनकी वृत्ति थी और संस्कृत में पद्यानुवाद करना उन्हें अच्छा लगता था। वे पारम्परिक पण्डित और आशु कवि थे। पारम्परिक पण्डित होते हुए भी वे रूढिवादी नहीं थे। महापुरुषों के प्रति उनके मन में सम्मान था। वे स्वयं भी आचरण एवं व्यवहार से महात्मा थे। भक्त कवियों के प्रति उनके मन में आत्मीय भाव था। उनकी ईश्वर के प्रति भी गहरी आस्था थी। शास्त्रज्ञान के साथ ही वे तैराकी और मल्लविद्या में दक्ष थे। धवल धौतवस्त्रों से परिवेष्टित सुदृढ दीर्घ काया उनके व्यक्तित्व को उभारती थी। गौसेवा और गोदुग्ध का पान उनकी जीवनचर्या के आजीवन अभिन्न अंग रहे। महापुरुषों की संगति और सत्साहित्य के अध्ययन का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे स्वयं अपने मन, वचन और कर्म से शास्त्रीय आचार का पालन करते थे। उनके व्यक्तित्व में भारतीय संस्कारों की गहरी छाप थी। उनका आचरण एवं व्यवहार शास्त्रीय आचारों से अनुशासित था।

* सहा० आचार्य, संस्कृत विभाग, डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म०प्र०)

लाला शंकर गयावाल एवं प्रियव्रत मिश्र (सम्पा०) पृष्ठ 15-27
© Pratnakīrti Oriental Research Institute, Vārāṇasī, U.P., India

उन्होंने हिन्दी के प्रायः सभी बड़े कवियों की रचनाओं को संस्कृत में अनूदित किया है। उन्होंने तुलसीदास आदि भारतीय कवियों के साथ ही कन्फ्यूशियस आदि विदेशियों की रचनाओं का भी सुललित संस्कृत भाषा में पद्यानुवाद किया। देवकाव्य कहे जाने वाले वैदिक सूक्तों को संस्कृत पद्यों में उतारा तो बुन्देली बोली के देशज रसिया गीतों को भी संस्कृत में सहेज दिया है।

उन्हें 2005 ई० में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया और मृत्यूपरान्त 2009 ई० में श्रीमद्रामचरितमानसम् पर साहित्य अकादमी, दिल्ली का अनुवाद पुरस्कार प्रदान किया गया। उनकी रचनाएँ दूर्वा आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं। वे भक्ति साहित्य के मर्मज्ञ और अनुवाद विधा के पारंगत कवि थे। उन्होंने अपनी लेखनी से संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया है। संस्कृत काव्य परम्परा के गंभीर अध्येता पं० द्विवेदी ने गोस्वामी तुलसीदास के साहित्य को तो जैसे हृदयंगम ही कर लिया था। सत्साहित्य के वे गंभीर अध्येता थे। पं० द्विवेदी ने संस्कृत की सुदीर्घ काव्य परम्परा के गंभीर अध्येता होते हुए भी विदेशी सत्साहित्य को पढ़ा, समझा और परखा था। वे आधुनिकता को निरखते, परखते और भली-भाँति बूझते थे। भारतीय ज्ञान-परंपरा के मौन साधक द्विवेदी जी की अनुवाद कार्य में प्रवृत्ति 'स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा' की तरह थी। उनका अधिकतर साहित्य मृत्यूपरांत प्रकाशित हुआ जबकि कुछ अभी अप्रकाशित है। वे 28 अप्रैल 2006 को ब्रह्मलीन हो गए।

1 साहित्य सम्पदा

कवि पं० प्रेमनारायण द्विवेदी की संस्कृत में कुछ मौलिक रचनाएँ, कुछ संस्कृत रूपान्तर हैं जबकि अधिकांश प्रसिद्ध कवियों की कृतियों के संस्कृत पद्यानुवाद हैं। उन्होंने हिन्दी में 'शनि चालीसा' और 'अपना सागर ताल बचाओ' कविताएँ भी लिखीं। प्रकाशन के क्रम से उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

1.1 श्रीमद्रामचरितमानसम्

इसकी रचना 1977 ई० में पूर्ण हो चुकी थी किन्तु इसका प्रथम प्रकाशन 2005 ई० में हो सका। यह गोस्वामी तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस का संस्कृत में पद्यानुवाद है। श्रीमद्रामचरितमानसम् के बालकाण्ड में 44, अयोध्याकाण्ड में 39, अरण्यकाण्ड में 10, किष्किन्धाकाण्ड में 6, सुन्दरकाण्ड में 10, लंकाकाण्ड में 24 और उत्तरकाण्ड में 24 सर्ग हैं। कुल सर्ग 157 तथा पद्यों की संख्या 7814 है।

ग्रन्थारम्भ में कवि ने 25 पद्यों में मंगलाचरण, सज्जनवन्दन किया है। भूमिका के रूप में डॉ० रमाकान्त शुक्ल का प्रास्ताविक तथा कवि का निवेदन प्रकाशित है। अनुवाद में दोहों की संख्या निर्दिष्ट की गयी है। इसमें स्रग्धरा, शार्दूलविक्रीडित, अनुष्टुप्, आर्या, मालिनी, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका, वंशस्थ, रथोद्धता, भुजंगप्रयात, तोटक, प्रहर्षिणी, पंचचामर, पृथ्वी, द्रुतविलम्बित, मन्दाक्रान्ता, शालिनी, पुष्पिताग्रा, स्वागता, शिखरिणी, गीतिका, हरिगीतिका आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है।

पं० प्रेमनारायण द्विवेदी ने गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित रामचरितमानस को अनुवाद का आधार बनाया है। यह सरस, रोचक और मर्मस्पर्शी अनुवाद है। भाषा प्रवाहपूर्ण है। शब्दचयन उपयुक्त है। शब्दाडम्बर का अभाव है। भावाभिव्यक्ति को प्रधानता दी गयी है। संस्कृत परम्परा के गम्भीर अध्येता पं० प्रेमनारायण द्विवेदी मूल ग्रन्थ के कथ्य की तह तक जाकर उसे अनुवाद में उतारने में सफल रहे हैं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

रामचरितमानस-

मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू॥
राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा। सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा॥[1]

पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनुवाद-

सतां समाजोऽखिलमङ्गलाय समुज्ज्वलो जङ्गमतीर्थराजः।
मन्दाकिनी यत्र च रामभक्तिः सरस्वती ब्रह्मविचारणा च॥[2]

रामचरितमानस-

रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराई॥[3]

पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनुवाद-

हर्म्यस्य रामायुधराजितस्य शोभा प्रवक्तुं वचनैर्न शक्यते।
नवं सुरम्यं तुलसीकदम्बकं तत्रैव पश्यन् हनुमान् ननन्द च॥[4]

2 काव्यसङ्ग्रहः

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्, नई दिल्ली की लोकप्रिय साहित्य ग्रन्थमाला के अन्तर्गत क्रमांक-35 पर काव्यसङ्ग्रह ग्रन्थ प्रकाशित है। भूमिका के रूप में संस्थान के कुलपति और प्रधान संपादक आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का पुरोवाक् और डॉ. ऋषभ भारद्वाज का सम्पादकीय है। इस ग्रन्थ में चार खण्ड हैं। प्रथम खण्ड स्तुतिकुसुममाला है। इसमें कवि की 28 स्तुतिपरक मौलिक रचनाएँ संकलित हैं। इनमें गणेश, शिव, दुर्गा, सरस्वती, सूर्य, हनुमान्, राम, कृष्ण आदि देवों के अष्टक, स्तुतियाँ हैं। इन स्तुतियों में लय और गत्यात्मकता के साथ ही ये गेयता भी है। इन्हें कुछ प्रसिद्ध गीतों की तर्ज पर भी गाया जा सकता है। स्वयं द्विवेदी जी अपने शिष्यों को ये स्तुतियाँ गाकर सुनाते थे, द्रष्टव्य-

[1] बालकाण्ड, 1.2
[2] श्रीमद्रामचरितमानसम्, पृ.-9
[3] सुंदरकाण्ड, दोहा-5
[4] श्रीमद्रामचरितमानसम्, पृ.-478

भज विश्वपतिं कमलारमणं
भज केशिनिषूदनमाशु हरिम्।
भज माधवमार्तिहरं सततं
यदि वाञ्छसि जन्म निजं सफलम्॥[5]

द्रुतमातपतापितभूमितले नहि धाव हरे नहि धाव हरे!
नवनीतमहो नयसे नय भो द्रुतमेहि पुनर्विहसन् निकटे।
रुचिरं नवनीतयुतं स्वमुखं किल दर्शय सञ्चितपापहरम्
भवसिन्धुगतं परिपाहि पुनः किल देहि सुखं हर मे विपदम्॥[6]

द्वितीय खण्ड स्फुटकाव्य है। इसमें कवि की विभिन्न विषयों पर 84 मौलिक रचनाएँ संकलित हैं। ये कविताएँ सहृदयों के हृदयाह्लाद तथा समाज के मार्गदर्शन की सामर्थ्य रखती हैं। इनमें ग्रीष्मादि ऋतुओं, महात्मा गाँधी आदि महापुरुषों, कार्गिल युद्ध जैसे संवेदनशील और चुनाव आदि समसामयिक विषयों पर रचनाएँ हैं, द्रष्टव्य-

कार्गिलक्षेत्रं कपटाद् रिपुणा निजाधिकारे नीतम्।
तान् दूरयितुं देशशासकैः रक्षाबलमानीतम्॥
तत्र शतघ्नीधरा निगूढाः प्रतिपक्षा विचरन्ति।
गुप्तमदृश्याः सुदृढकोष्ठकाद् गुलिकाभिर्वर्षन्ति॥[7]

काचकलितकुतुपात् किल मदिरां, पीत्वा जनः प्रमाद्यति रे!
को वा श्रृणुयाद् देशविपत्तिं, जनप्रतिनिधिः पश्यति रे!।[8]

तृतीय खण्ड अनूदितलघुकाव्यम् है। इसमें कवि ने इटालियन कवि ग्योवन्नी रैबॉनी आदि विभिन्न कवियों की रचनाओं का संस्कृत पद्यानुवाद किया है। रसिया गीत 'अकेली घेरी बन में आय, श्याम तेनें कैसी ठानी रे' का पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनुवाद-

एकाकिनीं श्याम वने कथं मां रुणत्सि मानिन्निवलां हि बालाम्।
वृन्दावनं यामि ततो निवृत्ता, ह्येष्यामि वर्षावनमेव भूयः॥[9]

चतुर्थ खण्ड वैदिकसूक्तसौरभम् है। इसमें कवि ने छः सूक्तों का संस्कृत पद्यानुवाद किया है। गुरु मुख से वेद-वेदाङ्ग का विधिवद् अध्ययन करने वाले द्विवेदी जी ने पुरुषसूक्त को अनुवाद में बोधगम्य बना दिया है। द्रष्टव्य-

ब्रह्माण्डमस्माच्च विराड्वरूपं, ब्रह्मा ततोऽभूत् पुरुषः परो यः।
ससर्ज भूमिं च पुरश्च सर्वास्तासु प्रविष्टः स्वपुरीषु जीवः॥[10]

[5] काव्यसङ्ग्रहः, पृ.-27
[6] उपरिवत्, पृ.-39
[7] युद्धं ततः प्रवृत्तम्, श्लोक 2, 4, पृ.-57
[8] जनः प्रमाद्यति, पृ.-107
[9] एकाकिनीं, काव्यसंग्रह, पृ.-271
[10] काव्यसंग्रह, पृ. 279

3 सप्तशतीसङ्ग्रह:

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्, नई दिल्ली की लोकप्रिय साहित्य ग्रन्थमाला के अन्तर्गत क्रमांक-35 पर सप्तशतीसङ्ग्रह ग्रन्थ प्रकाशित है। भूमिका के रूप में संस्थान के कुलपति और प्रधान संपादक आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का पुरोवाक् और डॉ० ऋषभ भारद्वाज का सम्पादकीय है। इस ग्रन्थ में दो सप्तशतियाँ प्रकाशित हैं- सदुक्तिसप्तशती और सौन्दर्यसप्तशती।

3.1 सदुक्तिसप्तशती

महापुरुष प्रकाशपुंज की तरह होते हैं। वे ज्ञान रूपी प्रकाश से लोक को प्रकाशित करते हैं। पुण्यभूमि भारत में वाल्मीकि, व्यास, महावीर, बुद्ध, रामानुज, निम्बार्क, वल्लभाचार्य, मध्व, चैतन्य, ज्ञानेश्वर, नानक, कबीर, सूर, तुलसी, तुकाराम, रामदास, रामतीर्थ, रामकृष्ण-परमहंस, विवेकानन्द आदि महापुरुष हुए हैं। इसी तरह बाहर भी सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, फ्रांसिस, लात्शे, कन्फ्यूशियस आदि महापुरुषों ने ज्ञान का प्रकाश फैलाया है। श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी ने महापुरुषों की सदुक्तियों को सन्तवाणी नाम से संग्रहीत किया था। द्विवेदी जी ने उनमें से 706 लोकोपयोगी सदुक्तियों का संस्कृत में पद्यानुवाद कर 'सदुक्तिसप्तशती' नाम दिया है। पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनुवाद द्रष्टव्य है-

महत्सङ्गं सदा कुर्यात् सुखार्थमिह बुद्धिमान्।
महावृक्षे खगाश्छायां लभन्तेऽथ फलानि च॥
अविश्वासी चलो भीरुश्चिन्तावानिन्द्रियानुगः।
संशयात्मा कदाचित् किं स्वप्नेऽपि सुखवान् भवेत्॥[11]

3.2 सौन्दर्यसप्तशती

सप्तशती परम्परा में गाथासप्तशती और आर्यासप्तशती लोकप्रिय ग्रन्थ हैं। कवि बिहारी ने बिहारीसतसई से जो ख्याति पायी, वह प्रसिद्ध ही है। यह सौन्दर्यसप्तशती बिहारी की सतसई का संस्कृत पद्यानुवाद है। इसकी संक्षिप्त भूमिका स्वयं द्विवेदी जी ने लिख रखी थी। अनुवाद करते समय द्विवेदी जी मूल काव्य में निहित अर्थ की तह तक जाते हैं। कवि की विवक्षा अर्थात् कवि के कथन के अभिप्राय को आत्मसात् करके ही अनुवाद किये गये हैं। अनुवाद सहज भाव से किये गये हैं। द्विवेदी जी ने शिष्यों को बताया था कि कवि हृदय में छन्द सहज उतरता है, जबकि खींचतान से कृत्रिम लगता है।

दुरति न कुच विच कंचुकी, चुपरी सारी सेत।
कवि आँखन के अरथ लौ, प्रगटि दिखाई देत॥

बिहारी के इस दोहे का पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनुवाद-

[11] सदुक्तिसप्तशती, श्लोक-591, 592

विशुभ्रशाट्यां नवचोलवस्त्रे स्थूलावुरोजौ परिदीव्यतः स्म।
कविप्रयुक्तेषु यथा सुवर्णेष्वर्थः स्वयं प्रस्फुटितोऽस्ति काव्ये॥[12]

कनक कनक तैं सौ गुनी मादकता अधिकाय।
उहि खाये बौरातु है, इहिं पाऐं बौराई॥

इसके पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनुवाद में मूल काव्य का सौन्दर्य और शब्दालंकार सुरक्षित बना रहा है-

उक्तं ध्रुवं शतगुणं कनकान्मदस्य संवर्धनाय कनकं ह्यधिकं जगत्याम्।
एकं नरस्तु मदवान् किल भक्षयित्वा लब्ध्वैव चैकमपरं भवति प्रमत्तः॥[13]

4 तुलसीसूरकाव्यसङ्ग्रहः

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्, नई दिल्ली की लोकप्रिय साहित्य ग्रन्थमाला के अन्तर्गत क्रमांक-70 पर तुलसीसूरकाव्यसङ्ग्रहः ग्रन्थ प्रकाशित है। भूमिका के रूप में संस्थान के कुलपति और प्रधान संपादक आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का पुरोवाक् और डॉ. ऋषभ भारद्वाज का सम्पादकीय है। इस ग्रन्थ में दो खण्ड हैं जिनमें हिन्दी कवि तुलसीदास और सूरदास के काव्यों के संस्कृत पद्यानुवाद प्रकाशित हैं। मूल काव्य के तत्सम शब्दों को ग्रहण करने से द्विवेदी जी के अनुवाद में मूल काव्य का रसास्वाद किया जा सकता है। कहीं कहीं मूलकाव्य की लय में ही अनुवाद को भी पढ़ा जा सकता है। अनुवाद करने का उद्देश्य लोकप्रसार है अतः भाषा इतनी सरल है कि जिन पाठकों को प्रसंग पहले से ज्ञात है, वे संस्कृत में मूलकाव्य का भाव समझ सकते हैं।
प्रथम खण्ड- तुलसीकाव्यसङ्ग्रहःहै। इस खण्ड में भक्तकवि गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं के पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत संस्कृत पद्य अनुवाद विनयपत्रिका, कवितावलिः, श्लोकावलिः, श्रीजानकीमङ्गलम्, श्रीपार्वतीमङ्गलम्, वैराग्यसन्दीपनी, वरवैरामायणम् और श्रीमद्हनुमद्बाहुकम् प्रकाशित हैं।

राम बाम दिसि जानकी लखन दाहिनी ओर।
ध्यान सकल कल्यानमय सुरतरु तुलसी तोर॥
राम नाम मणि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरै जो चाहसि उजियार॥

पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनुवाद-

श्रीजानकी यस्य विभाति वामतः, श्रीलक्ष्मणो दक्षिणतश्च राजते।

[12] सौन्दर्यसप्तशती, श्लोक-189
[13] उपरिवत्, श्लोक-192

ध्यातश्च यो मङ्गलमोदशान्तिदः, स एव रामस्तुलसीसुरद्रुमः ॥
रामनाममणिदीपं दधत स्वरसनाद्वारदेहल्याम् ।
अन्तर्बहिः प्रकाशं यदि वाञ्छथ तद् वदति तुलसी ॥[14]

त्वया सह वृषारूढो यदा यास्यति धूर्जटिः ।
हसिष्यन्ति नरा नार्यो मुखमाच्छाद्य पाणिभिः ॥
कुतर्ककोटिभिश्चेत्थं वटुर्वक्ति यथारुचि ।
न शैल इव वातेन चचालाऽद्रिसुतामनः ॥[15]

द्वितीय खण्ड- सूरकाव्यसङ्ग्रहः है। इस खण्ड में भक्तकवि सूरदास की रचनाओं के पं० प्रेम-नारायण द्विवेदी कृत संस्कृत पद्य अनुवाद सूररामचरितावलिः और सूरविनयपत्रिका प्रकाशित हैं।

प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो।
समदरसी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो।
एक लोहा पूजा में राखत एक घर बधिक परो।
पारस गुण अवगुण नहीं चितवत कंचन करत खरो।

पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनुवाद-

चित्ते कदाप्यवगुणान् न निधेहि मे त्वं
ख्यातो यथाऽसि समदृक् च तथा विधेहि।
पूजास्थले प्रणिहितं खलु लोहमेकं
दृष्टं जनैर्बधिकगेहगतं तथान्यत् ॥
न स्पर्शरत्नमिह नाथ करोति भेदं
स्वर्णं करोति सकलं सममेव सद्यः ।[16]

5 विविधकाव्यसङ्ग्रहः

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्, नई दिल्ली की लोकप्रिय साहित्य ग्रन्थमाला के अन्तर्गत क्रमांक-83 पर विविधकाव्यसङ्ग्रहः ग्रन्थ प्रकाशित है। भूमिका के रूप में संस्थान के कुलपति और प्रधान संपादक प्रो. परमेश्वर नारायण शास्त्री का पुरोवाक्, कवि-परिचय और सम्पादक डॉ. ऋषभ भारद्वाज का प्रास्ताविक है। इस ग्रन्थ में चार खण्ड हैं जिनमें भारतीय और विदेशी कवियों के काव्यों के संस्कृत पद्यानुवाद प्रकाशित हैं।

द्विवेदी जी ने प्रतिष्ठित कवियों के काव्यों का ही अनुवाद किया है जो उनकी साहित्यिक रुचि का भी परिचायक है। अनुवाद के लिए चुने गये काव्य भी अनुवादक की साहित्यिक

[14] श्लोकावलिः, श्लोक 1, 6
[15] श्रीपार्वतीमङ्गलम्, श्लोक 57-58
[16] तुलसीसूरकाव्यसङ्ग्रहः, पृ.-329

रुचि को प्रकट करते हैं। द्विवेदी जी के अनुवाद में मूल काव्य का रसास्वाद किया जा सकता है। कहीं कहीं मूलकाव्य की लय में ही अनुवाद को भी पढ़ा जा सकता है। अनुवाद करने का उद्देश्य लोकप्रसार है, अतः भाषा इतनी सरल है कि जिन पाठकों को प्रसंग पहले से ज्ञात हैं, वे संस्कृत में मूलकाव्य के अर्थ तक पहुँच सकते हैं। कहीं तो अनुवाद मूल से भी बेहतर प्रतीत होता है। सहृदय स्वयं मूल व अनुवाद का एक साथ आस्वाद कर इसका अनुभव कर सकते हैं। संस्कृत के विशाल शब्दकोष के ज्ञान से द्विवेदी जी के लिए अनुवाद कार्य सुकर रहा।

प्रथम खण्ड- रहीमकाव्यसुषमा है। इस खण्ड में रहीम की रचनाओं के पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत संस्कृत-पद्य अनुवाद दोहावली, रहीम-सोरठा, रहीमशृङ्गारसोरठा, रहिमनवरवै, नगरशोभा, घनाक्षरीछन्दांसि प्रकाशित हैं। रहीमकाव्यसुषमा पर द्विवेदी द्वारा लिखित पाँच पृष्ठ का निवेदनम् भी आरम्भ में छपा है। मूलकाव्य और अनुवाद का एक साथ पाठ साहित्यरसिकों को अपूर्व मनस्तोष प्रदान करता है।

कहु रहीम कैसे बने, केर बेर को संग।
वे रस डोलत आपने, इनके फाटत अंग॥

पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनुवाद-

कदलीबदरीसङ्गः कथं क्षेमाय कल्पते।
दोलायते रसेनैका विदीर्णाङ्गी तथापरा॥[17]

द्वितीय खण्ड- अश्रुकाव्यम् है। इस खण्ड में जयशंकर प्रसाद के 'आँसू' काव्य का पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत संस्कृत पद्य अनुवाद अश्रुकाव्यम् प्रकाशित है। घनीभूत पीड़ा का काव्य के माध्यम से प्रकटीकरण है- आँसू काव्य। अनुवादक द्विवेदी जी मूलकाव्य में विद्यमान भावप्रवणता को संस्कृत में उतारने में सफल रहे हैं।

जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति सी छाई।
दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आई॥

पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनुवाद-

सा मे पीडा घनीभूता, मस्तके स्मृतिवत् स्थिता।
दुर्दिने बाष्पधारेवाधुना वर्षितुमागता॥[18]

तृतीय खण्ड- स्फुटकाव्यानि है। इस खण्ड में मीरा, सुन्दरदास, जगन्नाथ, कबीर, महादेवी वर्मा, नारायण स्वामी, रसखान, हठी, आनन्दघन, रविदास, बुद्ध, सुकरात, कन्फ्यूशियस,

[17] रहीमदोहावली, श्लोक-34
[18] अश्रुकाव्यम्, 20

आगस्टाइन और एमरसन के काव्य और सद्वचनों के पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत संस्कृत पद्य अनुवाद प्रकाशित हैं।

निंदक नियरे राखिए आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय॥

पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनुवाद-

समीपं निन्दकं रक्ष कारयित्वाङ्गणे कुटीम्।
विना तोयं विना फेनं स्वभावं क्षालयत्यसौ॥[19]

चतुर्थ खण्ड- गद्यम् है। इस खण्ड में सात आलेख हैं। इनमें पं० प्रेमनारायण द्विवेदी का साहित्य-समीक्षक रूप दृष्टिगोचर होता है। आलोचना पर उनकी लेखनी कम ही चली किन्तु उनके समीक्षा के मानदण्ड उच्च थे। वे रामायण को काव्य का आदर्श रूप मानते थे। उन्होंने 'भारतीयकाव्यशास्त्रपरम्परा प्रयोजनं सौन्दर्यञ्च' लेख में रामायण के लिए लिखा है- 'काव्यमिदं गभीरं समग्रकाव्यगुणसम्पन्नम् अतिमधुरं च वर्तते।'[20]

6 श्रीमद्हनुमद्बाहुकम्

श्रीमद्हनुमद्बाहुकम् में भूमिका के रूप में सम्पादक डॉ. ऋषभ भारद्वाज का निवेदन और कवि-परिचय है। द्विवेदी जी ने तुलसीदास जी के प्रायः सभी काव्यों का अनुवाद किया है। उनमें से एक है- हनुमद्बाहुक। इसके अनुवाद के अन्त में द्विवेदी जी ने गोस्वामी तुलसीदास के प्रति श्रद्धा प्रकट की है। इस पुस्तक में पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत पद्यानुवाद, उसके नीचे गोस्वामी तुलसीदास के हनुमद्बाहुक का मूल पाठ और फिर हिन्दी भावार्थ दिया गया है। इसमें पाठक मूल हिन्दी पाठ, संस्कृत पद्यानुवाद और हिन्दी भावार्थ का एक साथ आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। द्विवेदी जी की भी भावना इसी प्रकार के द्विभाषी (मूल व अनुवाद एक साथ) संस्करण की रही होगी। आस्था तर्क से परे हुआ करती है। स्वयं द्विवेदी जी ने इसके पाठ को कष्टनिवारण का साधन बतलाया था। भावपूर्ण मन से इसका उच्चारण एक अपूर्व ऊर्जा का संचार करता है। मल्लविद्या के अभ्यासी होने के कारण उनका श्री हनुमान् जी महाराज के प्रति आस्थावान् होना स्वाभाविक ही है। अनुवाद के लिए चुने गये काव्य भी अनुवादक की साहित्यिक रुचि को प्रकट करते हैं। द्विवेदी जी के अनुवाद में मूल काव्य का रसास्वाद किया जा सकता है। पद्यानुवाद में गेयता है। कहीं कहीं मूलकाव्य की लय में ही अनुवाद को भी पढ़ा जा सकता है। संस्कृत के विशाल शब्दकोष के ज्ञान से द्विवेदी जी के लिए अनुवाद कार्य सुकर रहा। साहित्यरसिक अनुवाद और मूलकाव्य देखें।
पं० प्रेमनारायण द्विवेदी कृत अनुवाद-

[19] विविधकाव्यसङ्ग्रहः, पृ.-104
[20] उपरिवत्, पृ.-224

सगौरीकः सानुचरः शूलपाणिर्लोकपालाः
सीतारामलक्ष्मणाश्च सदानुकूलास्तस्य
लोकस्य परलोकस्य कस्यापि भूमिपालस्य
तुलसी वदति हृदये लालसा न तस्य।
बन्धमोक्षस्वामिनः करुणामहार्णवस्य
केशरिकिशोरकस्य कृपया कपीशस्य
देवसिद्धमुनयस्तं बालमिव लालयन्ति
यस्य हृदि हनुमतो हुंकारो वायुपुत्रस्य॥[21]

मूल पाठ-

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी।
लोक परलोक को बिसोक सो तिलोक ताहि,
तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी।
केसरीकिसोर बंदीछोरके नेवाजे सब,
कीरति बिमल कपि करुनानिधान की।
बालक ज्यों पालिहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको,
जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान की॥

7 पद्यकादम्बरी

यह महाकवि बाणभट्ट की प्रसिद्ध गद्य रचना कादम्बरी का पद्य रूपान्तर है किन्तु यह रचना अभी अपूर्ण प्राप्त हुई है। इसमें कादम्बरी कथामुख तक के भाग को शीर्षकों के साथ लगभग 300 पद्यों में रूपान्तरित किया गया है। यह देववाणी परिषद्, दिल्ली से प्रकाशित अर्वाचीनसंस्कृतम् पत्रिका में 2021 में प्रकाशित हुई है। ग्रन्थारम्भ में ही द्विवेदी जी लिखते हैं-

'प्रणम्य वाणीं मनसा प्रवीणां मनःस्थितां वादयतीं च वीणाम्।
बाणेन भावैर्ललितैः प्रवृद्धां कादम्बरीं तां रचयामि पद्यैः॥'

8 अप्रकाशित साहित्य

कवि पं० प्रेमनारायण द्विवेदी का कुछ साहित्य अभी अप्रकाशित है। अप्रकाशित रचनाओं में श्रीहनुमद्गद्यकाव्यम् और विवाहपद्धतिः नाम ज्ञात हैं। अप्रकाशित साहित्य उनके पुत्र-पौत्रों के पास है। उनके पौत्र श्री सूर्यकान्त द्विवेदी ने पद्यकादम्बरी को खोजकर प्रकाशित करवाया है। कुछ स्फुट पद्यों के उल्लेख मिले किन्तु वे पद्य प्राप्त नहीं हो सके हैं। कवि द्विवेदी ने

[21] श्रीमद्हनुमद्बाहुकम्, छन्द-13

विद्यार्थियों के आग्रह पर श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिताओं के लिए उन्हें विभिन्न अक्षरों से आरम्भ होने वाले पद्य भी रचकर दिये थे। वे अप्रकाशित हैं। जैसे द्विवेदी जी ने अध्यापन काल में श्री शक्ति मिश्र को निम्नलिखित श्लोक रचकर दिये थे-

णकारो मध्यभागे च प्रणवस्य विराजते।
प्रणवाज्जगदुत्पन्नं विभ्राजति नवं नवम्॥
णकारः शोभते चान्ते वीणावाद्ये मनोहरः।
क्वणन्ती शारदा वीणां कवीनां हृदि राजते॥
णकारो जैनमन्त्रेषु सर्वदादौ सुशोभते।
प्रणवस्य तथा मध्ये सोऽयं शान्तिप्रदो मतः॥
णकारश्चैव शस्त्राणां झणत्कारे प्रयुज्यते।
श्रूयते च झणत्कारो रणमध्ये भयावहः॥

9 वैष्णवपुराणों में आचार-समीक्षा

पं॰ प्रेमनारायण द्विवेदी ने 1964 में डॉ. वनमाला भवालकर के निर्देशन में पीएच.डी. उपाधि हेतु 'वैष्णवपुराणों में आचार-समीक्षा' शोधप्रबन्ध प्रस्तुत किया था। इसे पुस्तकाकार में 2018 में प्रकाशित किया गया है। ग्रन्थ के आरम्भ में प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी का प्राक्कथन, प्रो. कुसुम भूरिया की शुभाशंसा, प्रो. रमाकान्त पाण्डेय का पुरोवाक्, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सिंहदेव की शुभाशंसा, संपादक डॉ. ऋषभ भारद्वाज का निवेदन और पं॰ प्रेमनारायण द्विवेदी का जीवन-परिचय दिया गया है।

इस पुस्तक में बारह अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में पुराण समालोचना, द्वितीय अध्याय में आचार समालोचना के अन्तर्गत आचार की परिभाषा और महत्त्व आदि हैं। तृतीय अध्याय में सदाचार के प्रेरक तत्त्वों का निरूपण है। चतुर्थ अध्याय में आचार के मूल तत्त्वों में सत्य, अहिंसा, शौच, अस्तेय, दम या मनःसंयम या इन्द्रिय संयम, दया, अनसूया, अकाम, अक्रोध और अलोभ का निरूपण है। पंचम अध्याय में वर्णों के आचार के अन्तर्गत वर्णों के आचारों को प्रोत्साहन, चारों वर्णों के आचार, आचारों से वर्णों का उत्थान, आचार के उत्कर्ष से अन्य जन्म में भी उच्च वर्ण प्राप्ति, कुत्सित आचारों से उच्च वर्ण से पतन, वर्णों का परस्पर व्यवहार और शिष्टाचार का निरूपण है। षष्ठ अध्याय में ब्रह्मचर्याश्रम के आचार के अन्तर्गत अध्ययन में आचार की आवश्यकता, ब्रह्मचारी के नित्य आचार, ब्रह्मचर्य साधन के नियम और ब्रह्मचारी के गुण आदि का निरूपण है। सप्तम अध्याय में वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के आचार के अन्तर्गत वानप्रस्थ और तप का महत्त्व, यम, नियम और योगादि आचार, संन्यास ग्रहण में अपेक्षित आचार, संन्यासियों के विभाजन में आचार का महत्त्व, संन्यासी का सांसारिक आचार, चिन्तन, अव्यक्त लिंग संन्यासी, परोपकार आदि का निरूपण है। अष्टम अध्याय में गृहस्थाश्रम के नित्य आचारों का निरूपण है। इसमें गृहस्थाश्रम का आचार की दृष्टि से महत्त्व, शौचादि कृत्य, देवपूजन, पंच महायज्ञ, भोजन, अर्थोपार्जन और शयन आदि को बताया गया है। नवम अध्याय में गृहस्थाश्रम के पारिवारिक आचार तथा सामान्य शिष्टाचार हैं। इसमें आचार पालन में दम्पती, गृहिणी के कर्तव्य, माता-पिता के प्रति पुत्रों का

आचार, परिवार में पुरुष वर्ग का नारी के प्रति कर्तव्य, रक्षण, आदर, अवध्यता, सामाजिक सच्चरित्रता, पुरुष वर्ग की सच्चरित्रता, गृहस्थ के सामान्य शिष्टाचार और निषिद्ध आचार, गृहस्थ के रहन-सहन वेष-भूषा आदि का वर्णन है। दशम अध्याय में संस्कार, मृत्यु, श्राद्ध, प्रायश्चित्त संबंधी नैमित्तिक आचार हैं। एकादश अध्याय में अन्य नैमित्तिक व आध्यात्मिक आचारों का निरूपण है जिनमें यज्ञ, दान, पूर्त, व्रत, तीर्थ, आध्यात्मिक आचारों का वर्णन है। द्वादश अध्याय में उपसंहार है। अन्त में आधार ग्रन्थ सूची दी गयी है।

द्विवेदी जी दुरूह विषयों को भी सरल रूप में प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं। वैदिक साहित्य, धर्मशास्त्र, आर्षकाव्य, पुराण साहित्य और अन्य ग्रन्थों के सन्दर्भों से यह ग्रन्थ अत्यन्त प्रामाणिक तथा उपादेय बन गया है। विभिन्न प्रकार की कुण्ठाओं और अतिचार से पीड़ित समाज को प्रामाणिक शास्त्रीय मार्ग दिखाने में समर्थ यह ग्रन्थ नितान्त उपयोगी होने से पठनीय और संग्रहणीय है। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने इसके प्राक्कथन में लिखा है कि 'इस कृति में उन्होंने वैष्णव पुराणों में प्रतिपादित आचारों की सर्वांगीण विवेचना तो की ही है, सदाचार के प्रेरक तत्त्वों तथा मूल तत्त्वों की गवेषणा भी करते हुए आचारमूलक जीवन के निष्कर्ष तथा ध्येयों की भी पहचान करायी है।'

10 शनिचालीसा

संतों, महापुरुषों के हृदय अत्यन्त कोमल होते हैं, वे दूसरों के दुःख को देखकर दुःखी हो जाते हैं। दीन-दुःखियों के कष्ट-निवारण के लिए वे सतत प्रयत्नशील रहते हैं। पूज्य पं० प्रेमनारायण द्विवेदी ऐसे ही महापुरुष रहे हैं। वे जितने बड़े अध्येता, विद्वान् और ज्योतिष आदि शास्त्रों के पारंगत पंडित थे, उतने ही कोमल हृदय थे। दीन-दुःखियों की पीड़ाओं से वे मानो स्वयं कष्ट का अनुभव करते थे। दीन-दुःखी जनों के कष्ट-निवारण के लिए उन्होंने अपने ज्ञान को और काव्य रचने की क्षमता को माध्यम बनाया। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार कुछ क्रूर ग्रह लोगों को भारी पीड़ा देने वाले होते हैं किन्तु उस पीड़ा से बचने के उपाय भी शास्त्रों में बताये गये हैं। शनि ऐसे ही ग्रह हैं जिनके नाम से भी लोग भयभीत हो जाते हैं। शनि के प्रकोप से बचने का सरल उपाय है- 'शनि चालीसा' का पाठ। इसी उपाय को सर्वसुलभ करने के लिए महान् साधक और ज्योतिषविद् पं० प्रेमनारायण द्विवेदी ने शास्त्रों के गहन अनुशीलन पर आधारित इस 'शनिचालीसा' की रचना की है।

'अपना सागर ताल बचाओ' - यह एक लम्बी कविता है। यह सागर के प्रमुख जल-स्रोत रहे तालाब 'लाखा बंजारा झील' के पुनरुद्धार के लिए कवि द्वारा किया गया काव्यमय जन आह्वान है। यह अप्रकाशित है। इसका संगीतमय गायन हो सकता है।

11 पं० प्रेमनारायण द्विवेदी पर हुए शोधकार्य

कवि की रचनाओं पर डॉ. ऋषभ भारद्वाज ने शोध कार्य किया है। यह शोधप्रबन्ध 'संस्कृत के अर्वाचीन साहित्य के विकास में पं० प्रेमनारायण द्विवेदी का योगदान' शीर्षक से पुस्तकाकार में प्रकाशित है। इस पुस्तक का प्रकाशन सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली से हुआ है।

इसके अतिरिक्त संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन और केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर में भी द्विवेदी जी पर शोधकार्य हुए हैं।

शास्त्रीय परंपरा के अध्ययन और भारतीय परंपरा के संस्कारों से सम्पन्न पं प्रेमनारायण द्विवेदी ने संस्कृत साहित्य को मौलिक और अनूदित साहित्य से समृद्ध किया है। राधावल्लभ त्रिपाठी ने संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास भाग- 4 (पृ. 2228-2230) में कवि द्विवेदी जी की प्रशंसा की है। उनके साहित्य से अनुवाद की विस्तृत भूमिका निर्मित हुई है। उनका शोधग्रन्थ आचार का शास्त्रीय मार्ग प्रशस्त करता है। उनके काव्य के मानदण्ड उच्च हैं और रामायण के आदर्श के अनुगामी हैं।

सहायक-ग्रन्थ-सूची

1. आचार्य विश्वेश्वरसिद्धान्तशिरोमणिः, डॉ० नगेन्द्रः(सम्पा०), ध्वन्यालोकः, ज्ञानमण्डल-लिमिटेड, वाराणसी, 1996
2. द्विवेदी, पं० प्रेमनारायण, शुक्ल डॉ० रमाकान्त (सम्पा०), श्रीमद्रामचरितमानसम्, देव-वाणी परिषद्, नई दिल्ली, 2005 ई०
3. द्विवेदी, पं० प्रेमनारायण, भारद्वाज डॉ० ऋषभ (सम्पा०), काव्यसङ्ग्रहः (पं० प्रेमनारायणद्विवेदिरचनावलिः प्रथमो भागः), राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्, नई दिल्ली, 2012 ई०
4. द्विवेदी, पं० प्रेमनारायण, भारद्वाज डॉ० ऋषभ (सम्पा०), सप्तशतीसङ्ग्रहः (पं० प्रेमनारायणद्विवेदिरचनावलिः द्वितीयो भागः), राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्, नई दिल्ली, 2012 ई०
5. द्विवेदी, पं० प्रेमनारायण, भारद्वाज डॉ० ऋषभ (सम्पा०), तुलसीसूरकाव्यसङ्ग्रहः (पं० प्रेमनारायणद्विवेदिरचनावलिः तृतीयो भागः), राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्, नई दिल्ली, 2013 ई०
6. द्विवेदी, पं० प्रेमनारायण, भारद्वाज डॉ० ऋषभ (सम्पा०), विविधकाव्यसङ्ग्रहः (पं० प्रेमनारायणद्विवेदिरचनावलिः चतुर्थो भागः), राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्, नई दिल्ली, 2017 ई०
7. द्विवेदी, पं० प्रेमनारायण, भारद्वाज डॉ० ऋषभ (सम्पा०), श्रीमद्-हनुमद्बाहुकम्, एजुकेशनल बुक सर्विस, नई दिल्ली, 2018 ई०
8. द्विवेदी पं० प्रेमनारायण, भारद्वाज डॉ० ऋषभ (सम्पा०), श्रीमद्-हनुमद्बाहुकम्, सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2018 ई०
9. भारद्वाज, डॉ० ऋषभ, संस्कृत के अर्वाचीन साहित्य के विकास में पं० प्रेमनारायण द्विवेदी का योगदान, सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2014 ई०
10. द्विवेदी, पं० प्रेमनारायण, 'पद्यकादम्बरी', अर्वाचीनसंस्कृतम् पत्रिका, अंक : 168-171, 2021 ई०, पृ. 205-241, देववाणी परिषद्, दिल्ली.
11. त्रिपाठी, राधावल्लभ, संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास खण्ड-4, न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली, 2018 ई०